Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

बृजक्षेत्र के लोक जीवन में लोक नाट्य

डॉ0 रुचि पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत, आगरा कॉलेज, आगरा, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 161-163
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

सारांश– आधुनिक नाटकीय प्रयोगों ने आनन्द को जनमानस से छीन लिया है। तनाव, कुण्ठाओं से परिपूर्ण जीवन में रससिकता अपर्याप्य है। घर के बन्द कमरे में टेलीविजन या कम्प्यूटर पर देखी जाने वाली फिल्मों में वो आनन्द कहाँ जो खुले मंच पर अभिनीत किये जाने वाले लोकनाट्यों से प्राप्त होता था। आवश्यकता है सरकार द्वारा लोकमंगल व विकास के लिए प्रयास की, जो शिथिल होती लोक कला को जीवन्तता प्रदान करने वाली औषधि के रूप में कार्य कर सके साँय से प्रभात तक अनवरत देखी जाने वाली लोक प्रस्तुतियों के लिए प्रोत्साहन के दो शब्द नहीं, कार्यरूपता चाहिए।

मुख्य शब्द–बृजक्षेत्र, लोक, जीवन, लोक नाट्य, भारत, संस्कृति।

भारत विभिन्न प्रान्तों का देश है जहाँ लोक जीवन, संस्कृति परम्पराओं में विभिन्नता होते हुए भी एकरूपता दृष्टिगोचर होती है जिसका प्रमुख कारण है आनन्द की अनुभूति और यहीं से जन्म होता है लोकनाट्यों का विशेष रूप से बृज क्षेत्र के लोक जीवन में लोक नाट्य विषय पर चिन्तन करने से पूर्व कपितय बिन्दु विचारणीय है।

1. नाट्य व लोक नाट्य में अन्तर : दशरूपकार धनंजय नाट्य शब्द की व्याख्या करते हुए कहते हैं ''अवस्थानुकृतिर्नाटयं'' काव्य में वर्णित धीरोदात्तदि नायक की अवस्थाओं का अनुकरण कर एकरूपता, तादात्मय स्थापित करना ही ''नाट्य'' है जोकि आङ्गिक वाचिक, सात्विक, आहार्य द्वारा स्थापित किया जाता है। नियम व सीमा में आबद्ध होने से साथ ही कथावस्तु गतिशील होती है।

लोकनाट्य जब नाट्य में लोकशब्द जुड़ता है तो उसका अर्थ शास्त्रीय कोटि से भिन्न हो जाता है। शास्त्रीय नियमों के कठिन मार्ग को छोड़कर सामान्य जनजीवन की प्रथाओं, विश्वासों, परम्पराओं, रीतियों को अभिव्यक्त करने वाला भाव ही लोक नाट्य है, जिसमें नागरिक, ग्रामीण और जंगली सभी प्रकार के लोग सम्मिलित है। दूसरे शब्दों में जब मानव, पर्वों, ऋतुउत्सवों, यज्ञानुष्ठानों पर मनोरंजनस्वरूप आसपास के जीवन से जुड़ी घटनाओं का अनुकरण कर अभिनय करता है, वही लोक नाट्य है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

बृजक्षेत्र में लोकनाट्य की विधाएँ–

बृजक्षेत्र के अन्तर्गत आगरा मण्डल, मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, महावन, गोवर्द्धन, बरसाना, हाथरस, सासनी आदि क्षेत्र आते हैं। इन क्षेत्रों में प्रचलित लोकनाट्य की विधाओं में रासलीला, रामलीला, भगत, नौटंकी, स्वाꣳ आदि प्रमुख हैं। इन विधाओं में 'रास' सबका उद्‌गम स्थान है, जिसमें आनन्द की प्रतीति ही उसका प्रयोजन है। रासलीला ने दो शताब्दियों तक भक्ति आन्दोलन के सन्देश को जन–जन तक पहुँचाया था।

रामलीला–पिछले पचास वर्षों में बृज की ''रामलीला'' विख्यात रही है। बृजभाषा की मधुर गायन शैली में रामचरित का मंचन उसकी प्रसिद्धि का कारण है।

स्वाꣳ–स्वाꣳमुक्त रंगमंच पर ऐतिहासिक, धार्मिक और सामाजिक कथासार को लोक वाद्य नक्कारे की ताल पर प्रस्तुत किया जाता था। इसके माध्यम से होली आदि पर्वों पर भी नाना रूपों का अभिनय कर हास्य की प्रस्तुति की जाती है।

भगत–प्रारम्भ में, भक्तिपरक आख्यानों से जुड़े होने के बाद ऐतिहासिक व सामाजिक आख्यानों को सम्मिलित कर लिया गया। इस विद्या में ''नृत्य'' नहीं है। नगाड़ा, हारमोनियम, ढोलक, चिमटा, कटोरी आदि वाद्य मंत्रों के प्रयोग के साथ पद्यात्मक कथानक की प्रस्तुति की जाती थी। भगत का सर्वप्रथम उल्लेख ''फजल रचित'' ''आइन–ए–अकबरी'' में मिलता है। गायकी इसकी विशेषता है। भगत का प्रादुर्भाव ''बिसन बिरहम'' द्वारा अमरोहा में कया गया था। बाद में श्री जौहरी राय 1827 में इसे आगरा लाये थे। यहीं से आगरा की पुरानी बस्तियों में अखाड़ों का जन्म हुआ। आज आगरा में 18 अखाड़े हैं। 2005, 2015 में ताज महोत्सव में भी इनका मंचन किया जा चुका है। यह पूर्णतः निःशुल्क है जिसमें हर वर्ग आनन्द का अनुभव करता है।

नौटंकी–सम्भवतः यह संस्कृत के भाग ''मुकुन्दान्द'' और ''रससदन''की परम्परा है। इसमें मूलतः श्रृंगार रस की प्रधानता होती है। इस विद्या में स्त्री पुत्र भी अभिनय करते हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के द्वितीय वर्ष के छात्रों ने ''औथेलो'' नाटक (शेक्सपीयर) को नौटंकी में ढालकर अद्‌भुत प्रस्तुति दी है जो एक नवीन प्रयोग है।

इनके अतिरिक्त प्रहसनों में ''खोइया'' बृज क्षेत्र में प्रचलित है जिसकी विवाहादि पर स्त्री पात्रों के द्वारा प्रस्तुति की जाती है।

कृत्रिम उपकरणों या आडम्बरपूर्ण साज सज्जा से मुक्त ये विधाएँ, मुक्त रंगमंच यथा चौपाल का चबूतरा, मन्दिर का आहाता या खुले मैदान में लगाए गए दो–चार तख्त पर अभिनीत हो जाती है। जनता

खुले मैदान में बैठकर या खड़े होकर नाटक का आनन्द लेती है। ऐसी विधाओं का शनैः–शनैः लुप्त होना चिन्तनीय है। ये विधाएँ लोक–आस्थाओं का प्रतीक है जिसने अतीत से लेकर अब तक निरन्तर जनरंजन किया है। वर्तमान में मद्धिम पड़ती इन श्वासों को जीवन्त रखने की आवश्यकता है। आधुनिक नाटकीय प्रयोगों ने आनन्द को जनमानस से छीन लिया है। तनाव, कुण्ठाओं से परिपूर्ण जीवन में रससिकता अपर्याप्य है। घर के बन्द कमरे में टेलीविजन या कम्प्यूटर पर देखी जाने वाली फिल्मों में वो आनन्द कहाँ जो खुले मंच पर अभिनीत किये जाने वाले लोकनाट्यों से प्राप्त होता था। आवश्यकता है सरकार द्वारा लोकमंगल व विकास के लिए प्रयास की, जो शिथिल होती लोक कला को जीवन्तता प्रदान करने वाली औषधि के रूप में कार्य कर सके साँय से प्रभात तक अनवरत देखी जाने वाली लोक प्रस्तुतियों के लिए प्रोत्साहन के दो शब्द नहीं, कार्यरूपता चाहिए।

सुझाव–

1. लोकनाट्य हेतु विश्वविद्यालय, संस्थान स्थापित किये जायें तथा विश्वविद्यालयों में अलग से विभाग बनाये जाएँ।
2. विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में इसका समावेशन किया जाये जिसके फलस्वरूप बृज अंचल के लोकपात्रों को सरकारी पदों पर नियुक्त किया जा सके।
3. देश–विदेश में लोकनाट्य मंचल करने हेतु अवसर प्रदान किये जायें।
4. लोक नाट्यों से जुड़े कलाकारों को जीविका के साथ–साथ सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया जाये।

''शुभाशया;''

अनुक्रमणिका

1. दि0 के0 वे देकर नाट्यशास्त्र एवं सांख्य दर्शन में भाव आलोचना (जनवरी–मार्च–१९६१)।
2. भारतमुनि का नाट्यशास्त्र।
3. डॉ0 देवी शंकर अवस्थी–बृजभाषा काव्य में प्रेमाभक्ति।
4. कृष्ण दत्त बाजपेयी–ब्रज का इतिहास।